# हिमाचल प्रदेश

सर्व शिक्षा अभियान

सब पढ़ें सब बढ़ें

ज्वालामुखी शक्तिपीठ की वैकल्पिक पाठशाला में पढ़ने वाले बच्चे अपनी अध्यापिका के साथ

सदर थाना शिमला स्थित शिक्षा गारंटी योजना केन्द्र में शिक्षा ग्रहण करने वाले बच्चे अपनी कक्षा में

## प्रदेश में शिक्षा से वंचित बच्चों को मुख्यधारा में लाने का सशक्त माध्यम रहे :

# ई.जी.एस./ए.आई.ई./मोबाइल स्कूल

**प्रारंभिक** शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने के साथ–साथ सर्व शिक्षा अभियान का प्रमुख उद्देश्य हर ऐसे बच्चे को शिक्षित करना है जो अब तक शिक्षा से अनजान है या फिर गरीबी के कारण पढ़ाई बीच में ही छोड़ देता है। ऐसे बच्चों के लिए शिक्षा गारंटी केन्द्र/मोबाइल स्कूल जैसी वैकल्पिक व्यवस्था की गई है।

हिमाचल प्रदेश में 6–14 वर्ष आयु वर्ग के स्कूल न जाने वाले बच्चों की संख्या यद्यपि एक प्रतिशत से भी कम है। तथापि जो बच्चे अब भी शिक्षा से वंचित हैं उन्हें स्कूली शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने के प्रयास युद्ध स्तर पर जारी हैं।

प्रदेश में वर्ष 2003 से 2008 तक स्कूल न जाने वाले बच्चों की शिक्षा हेतु वैकल्पिक पाठशालाएं खोली गई थीं जिनका उद्देश्य बच्चों को उपयुक्त शैक्षिक माहौल में पढ़ने की आदत विकसित करना था। सर्व शिक्षा अभियान के तहत चलाए जा रहे ई.जी.एस. केन्द्र इन बच्चों की शिक्षा हेतु किसी प्रका की स्थायी व्यवस्था नही है और न ही यह समस्या का समाधान है। वास्तव में इन केन्द्रों में बच्चों को शिक्षा के प्रति जागृत कर औपचारिक पाठशालाओं में भरती कर शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ना है जिसके पश्चात इन केन्द्रों का कोई औचित्य नहीं रह जाता। भारत सरकार के दिशा निर्देशानुसार यह एक वैकल्पिक व्यवस्था है और अंततः इसे बंद किया जाना है।

हिमाचल प्रदेश में भी जरूरतमंद अस्थायी बस्तियों में इन केन्द्रों का सफलतापूर्वक संचालन किया गया। बच्चों को सर्वप्रथम इन केन्द्रों में पढ़ाई के प्रति आकर्षित किया गया। बाद में समीपवर्ती प्राथमिक पाठशालाओं में प्रवेश दिला दिया गया।

प्रदेश में ई.जी.एम. केन्द्र मात्र उन्हीं स्थानों पर खोले गए जहां या तो प्राथमिक पाठशाला बहुत दूर है या पारिवारिक व्यवसाय के चलते बच्चे शिक्षा से वंचित हैं तथा इन क्षेत्रों तक पहुंच संभव नहीं है। इन केन्द्रों के माध्यम से बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा में लाया गया तथा अधिकांश केन्द्र अब बंद किए जा चुके हैं।

वर्ष 2009 के आरंभ में प्रदेश के विभिन्न जिलों में स्कूल न जाने वाले 2587 बच्चे चिन्हित किए गए थे। इनमें से 1564 बच्चों को दिसम्बर 2009 तक औपचारिक अथवा अनौपचारिक पाठशालाओं में प्रवेश दिला दिया गया। वर्तमान में स्कूल न जाने वाले बच्चों की संख्या मात्र 1023 रह गई है। प्रदेश में इस समय मात्र 77 अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र (ई.जी.एस./ए.आई.ई./मोबाइल स्कूल) चल रहे हैं जिनमें 2135 बच्चों को शिक्षा प्रदान की जा रही है।

इन केन्द्रों में विशेष प्रवेश अभियान, उत्प्रेरण शिविरों, अभिभावकों को परामर्श देने जैसे प्रयासों के जरिए बच्चों को स्कूल लाया जाता है। इन केन्द्रों में समय एवं पाठ्यक्रम में लचीलापन होने के कारण शहरी क्षेत्रों में कबाड़ उठाने, गुब्बारे बेचने, बाजारों में प्लास्टिक बैग व छोटा–मोटा सामान बेचने, सड़कों व मंदिरों में भीख मांगने वाले बच्चे भी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

प्रवासी मजदूरों की आवाजाही से स्कूल से बाहर रहने वाले बच्चों की संख्या समय–समय पर बदलती रहती है। इन बच्चों के लिए वैकल्पिक नवाचारी शिक्षा (ए.आई.ई.) का प्रावधान सर्व शिक्षा अभियान में निहित है। यह शिक्षा केन्द्र 3–9 माह की अवधि हेतु मात्र इस उद्देश्य से चलाए जाते हैं ताकि बच्चे औपचारिक पाठशालाओं में प्रवेश पाने हेतु प्रेरित हो सकें।

प्रदेश में अधिकांशतः स्कूल न जाने वाले बच्चे प्रवासी गुज्जर समुदाय से संबंध रखते हैं जो कि सर्दियों में मैदानी इलाकों में तथा गर्मियों में अधिक ऊंचाई वाले क्षेत्रों में अपनी भेड़–बकरियों के साथ चले जाते हैं। ऐसे बच्चों के लिए भी प्रदेश में 21 मोबाइल स्कूल (चलती–फिरती पाठशालाएं) खोले गए हैं। इनमें से 15 स्कूल शिमला जिले में, 5 स्कूल सिरमौर तथा एक चम्बा जिले में चलाया जा रहा है। चम्बा जिले में गुज्जर समुदाय के बच्चों की संख्या जांचने के बाद और अधिक मोबाइल स्कूल खोले जाने प्रस्तावित हैं। इन मोबाइल स्कूलों की विशेषता यह है कि इनमें बच्चों को शिक्षा देने वाले अनुदेशक बच्चों के साथ–साथ ही एक स्थान से दूसरे स्थान के लिए प्रस्थान करते हैं तथा नई जगह में बच्चों की शिक्षा जारी रखते हैं। सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत यह एक अनोखी व्यवस्था की गई है ताकि किसी भी परिस्थिति में बच्चे अपने शिक्षा के अधिकार से वंचित न रहने पाएं।

इन वैकल्पिक केन्द्रों में शिक्षण प्रदान कर रहे अनुदेशकों को सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों के माध्यम से 30 दिन का प्रशिक्षण दिया जाता है। यह अध्यापक बच्चों को भाषा, गणित एवं पर्यावरण विज्ञान संबंधी बुनियादी अध्ययन करवाते हैं ताकि बच्चे औपचारिक पाठशालाओं में दी जा रही शिक्षा को सहज रूप से ग्रहण करने में सक्षम हो सकें।

सभी वैकल्पिक पाठशालाओं में बच्चों को मध्याह्न भोजन की व्यवस्था है। वर्दी व पाठ्य पुस्तकें भी बच्चों को निःशुल्क प्रदान की जाती हैं।

भारत सरकार ने वर्ष 2010–11 से सभी राज्यों को शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के तहत वैकल्पिक पाठशालाओं की बजाय या तो सम्पूर्ण स्कूलों का प्रावधान करने या फिर गैर आवासीय सेतु पाठ्यक्रम केन्द्र (एन.आर.बी.सी.सी.) स्थापित करने को कहा है। इन केन्द्रों की स्थापना का उद्देश्य बच्चों को औपचारिक पाठशाला में उनकी आयु के अनुसार कक्षा में प्रवेश पाने हेतु तैयार करना है। यह केन्द्र स्कूल न जाने वाले बच्चों की संख्या के अनुरूप खोले जाएंगे। जबकि प्रदेश में वर्तमान में चल रहे 21 मोबाइल स्कूलों को यथावत् जारी रखने की योजना है।

वैकल्पिक केन्द्रों की कार्य प्रणाली सुचारू रूप से चलती रहे इसका जायजा लेने के लिए समय–समय पर राज्य एवं जिला स्तर से मॉनीटरिंग टीमें इन केन्द्रों का दौरा करती हैं और आवश्यकतानुसार कार्रवाई की जाती है।

उल्लेखनीय है कि वैकल्पिक केन्द्र में दी जा रही शिक्षा स्थायी व्यवस्था नहीं है। ये केन्द्र मात्र शिक्षा से पूर्णतयः अनजान व वंचित बच्चों को सामान्य/औपचारिक पाठशालाओं में दी जा रही शिक्षा की मुख्यधारा में लाने हेतु तैयार करने के उद्देश्य से एक अस्थायी व्यवस्था है जिसे एक समय सीमा के बाद बंद किया जाना निश्चित है।

### हिमाचल प्रदेश में अनौपचारिक पाठशालाओं का जिलावार ब्योरा

| क्र. सं. | जिला | ई.जी.एस./ए.आई.ई./मोबाइल स्कूलों की संख्या | |
|---|---|---|---|
| 1. | बिलासपुर | – | |
| 2. | चम्बा | 1 | मोबाइल स्कूल |
| 3. | हमीरपुर | – | |
| 4. | कांगड़ा | 5 | ए.आई.ई. |
| 5. | किन्नौर | 1 | ई.जी.एस. |
| 6. | कुल्लू | 5 | ई.जी.एस. |
| 7. | लाहौल–स्पीति | – | |
| 8. | मंडी | 1 | ई.जी.एस. |
| 9. | शिमला | 16 | (15 मोबाइल स्कूल/1 ई.जी.एस.) |
| 10. | सिरमौर | 11 | (2 ई.जी.एस./5 मोबाइल स्कूल/4 ए.आई.ई.) |
| 11. | सोलन | 21 | (10 ई.जी.एस./11 ए.आई.ई.) |
| 12. | ऊना | 16 | (10 ई.जी.एस./ 6 ए.आई.ई.) |
| | कुल | 77 | (30 ई.जी.एस.,/21 मोबाइल स्कूल/26 ए.आई.ई.) |

## उल्लेखनीय उदाहरण प्रस्तुत करते सर्व शिक्षा अभियान के वैकल्पिक शिक्षा केन्द्र

- **वैकल्पिक केन्द्र ज्वालामुखी मंदिर, कांगड़ा :**

कांगड़ा स्थित प्रसिद्ध शक्तिपीठ श्री ज्वालामुखी मंदिर परिसर में भीख मांगने वाले बच्चों के लिए चलाई जा रही वैकल्पिक पाठशाला वर्ष 2008 में खोली गई इस पाठशाला में लगभग 60 बच्चों ने प्रवेश पाया तथा उनमें से कुछ बच्चे स्कूल पूर्व शिक्षा ग्रहण करने के बाद औपचारिक पाठशालाओं में प्रवेश पा चुके हैं। वर्तमान में यहां बिहार, राजस्थान एवं मध्य प्रदेश के प्रवासी मजदूरों के लगभग 40 बच्चे अध्ययनरत हैं तथा सर्व शिक्षा अभियान के प्रयासों से डाक्टर व एक्टर बनने के सपने संजोये हुए हैं।

- **वैकल्पिक केन्द्र सदर थाना, शिमला :**

सर्व शिक्षा अभियान के तत्वावधान में शिमला स्थित सदर थाना में शुरू किया गया वैकल्पिक केन्द्र उन बच्चों की शिक्षा का बीड़ा उठाए है जो दिनभर बाजारों में घूमकर छोटा– मोटा सामान बेचकर अपनी रोजी रोटी कमाने में जुटे हैं।

सुबह के समय स्कूल में शिक्षा ग्रहण करने वाले ये बच्चे दिनभर बाजारों में बेचने वाला अपना सामान साथ लेकर आते हैं और 3–4 घंटे पढ़ाई के बाद मध्याह्न भोजन कर अपने– अपने गंतव्य के लिए निकल पड़ते हैं। काम के साथ–साथ पढ़ाई को इन्होंने अपनी दिनचर्या बना लिया है तथा सुनहरे भविष्य के सपने सहेजने लगे हैं। इनमें से कुछ बच्चे तो बंधुआ मजदूरी भी करते हैं लेकिन फिर भी शिक्षा की अहमियत को समझते हुए सर्व शिक्षा अभियान के तहत प्राप्त अवसर का लाभ उठाने की चाहत रखते हैं।

- **मोबाइल स्कूल प्लानी माता, चम्बा :**

सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत चम्बा जिले में खजियार के समीप 'प्लानी माता' मोबाइल स्कूल खानाबदोश गुज्जर समुदाय के बच्चों के लिए चलाया जा रहा है। सर्दियों में ये लोग अपने पशुधन के साथ नूरपुर क्षेत्र की ओर चले जाते हैं जहां इनके बच्चों की शिक्षा जारी रहती है।

- **डे केयर सेंटर बसनूर, कांगड़ा :**

कांगड़ा जिले के रैत ब्लॉक में स्थित बसनूर डे केयर सेंटर एक ऐसा केन्द्र है जहां विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चे तथा ई.जी.एस. केन्द्र के बच्चे एक साथ शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत चलाए जा रहे इस केन्द्र में महाराष्ट्र, राजस्थान तथा बिहार के ईंट भट्ठों में कार्यरत प्रवासी मजदूरों के बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। बुनियादी शिक्षा ग्रहण करने के बाद ये बच्चे बसनूर स्थित राजकीय प्राथमिक पाठशाला में प्रवेश पा कर शिक्षा की मुख्यधारा से जुड़ जाते हैं। एक बार शिक्षा की अलख जग जाने के बाद इनके माता–पिता दूसरे स्थानों पर जाने के बाद भी अपने बच्चों को स्कूल भेजने के लिए तत्पर रहते हैं। इस सेंटर की विशेषता यह है कि यहां पर विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की शिक्षा की भी व्यवस्था है। यहां उपलब्ध उपकरण इन बच्चों की शिक्षा में सहायक सिद्ध हो रहे हैं।

# बाल कविताएं - एक प्रेरणात्मक पहल

**शिक्षा** का उद्देश्य बच्चों को मात्र किताबी ज्ञान देना ही नहीं है। उनके सर्वांगीण विकास के लिए जरूरी है कि उन्हें उचित माहौल एवं अवसर प्रदान कर उनमें छिपी प्रतिभा को उजागर करना तथा उन्हें उचित मार्गदर्शन प्रदान करना। प्रारंभिक स्तर पर ही यदि बच्चों की रचनात्मक अभिव्यक्ति उजागर होने लगे तो उनका उज्ज्वल भविष्य सुनिश्चित किया जा सकता है।

सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत 6–14 वर्ष आयु वर्ग के हर एक बच्चे को शिक्षा से जोड़ने के एक अहम लक्ष्य को प्रदेश ने लगभग हासिल कर ही लिया है, लेकिन साथ ही बच्चों को खेल–खेल में तथा कक्षा की गतिविधियों में केन्द्रीय भूमिका निभाते हुए शिक्षित करने के लिए भी प्रदेश में अनेक महत्त्वपूर्ण पग उठाए गए हैं। अध्यापन–अधिगम सामग्री का निर्माण हो या फिर खेल, अथवा सांस्कृतिक गतिविधियां विभिन्न प्रतियोगिताएं बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित की जाती है। बच्चे इनमें अपनी प्रतिभा का भरपूर प्रदर्शन करते हैं। यही वह गतिविधियां होती हैं, जो उनके व्यक्तित्व विकास में अहम भूमिका निभाती हैं। निःसंदेह इस सबके लिए जरूरी है कि अध्यापक बच्चों के समक्ष पाठ्यक्रम को सरस, सरल व सहज रूप में प्रस्तुत कर उनकी कक्षा में अधिकाधिक सक्रियता को बढ़ावा दें। एक कुशल एवं निपुण अध्यापक पर निर्भर करता है कि वह बच्चों को किस प्रकार अपनी प्रतिभा को बाहर लाने के लिए प्रेरित करता है।

सर्व शिक्षा अभियान के तहत बच्चों की मासिक बाल पत्रिका अक्कड़–बक्कड़ का प्रकाशन इसी उद्देश्य से शुरू किया गया था। जहां अध्यापकों ने स्वयं रुचि लेकर बच्चों तक पत्रिका को पहुंचाया और उन्हें इसके लिए रचनाएं भेजने हेतु प्रेरित किया, वहां से बच्चों की भागीदारी निरन्तर जारी है। बच्चे हर बार कुछ नया करने की चेष्टा में रहते हैं। कविता, कहानी, चुटकुले, पहेलियां, पेंटिंग्ज और यहां तक कि अन्तर ढूढो जैसी रचनाएं भी वे हमें भेजते हैं। इससे स्पष्ट है कि बच्चों को यदि उचित अवसर एवं मंच मिले तो वे खुलकर अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति दे पाने में सक्षम होते हैं। लेकिन यहां हम एक बार फिर कहेंगे कि यह तभी संभव है जब अध्यापक पूर्ण समर्पण, कर्तव्यनिष्ठा एवं ईमानदारी से अपनी भूमिका का निर्वहन करें। इस अंक में हम आपके लिए बच्चों की कविताएं प्रस्तुत कर रहे हैं। ये कविताएं बच्चों ने अध्यापक से प्रेरणा पाकर छपवाने के उद्देश्य से दी हैं।

संभवतः कुछ रचनाएं पुस्तकों से भी हैं लेकिन बच्चों के उत्साह को बनाए रखने के उद्देश्य से हम इन्हें यहां प्रस्तुत कर रहे हैं। संभव है इससे प्रोत्साहन पा कर बच्चे अपनी अभिव्यक्ति को कलमबद्ध करने की राह खुद व खुद पकड़ लें। हो सकता है आपके स्कूलों के बच्चे भी ऐसी चाह रखते हों। आप उनका उचित मार्गदर्शन कर शिक्षा के उद्देश्य को सार्थक करने में अपनी भूमिका को और प्रभावी बना सकते हैं।

प्रस्तुत कविताएं सिरमौर जिला के पांवटा में स्थित राजकीय प्राथमिक पाठशाला, कटवाड़ी बागड़थ के बच्चों की हैं तथा उसी स्कूल के अध्यापक अनन्त आलोक के प्रयासों से 'ओपन लेटर' मासिक समाचार पत्र में प्रकाशित की गई हैं।

### रेल

छुक-छुक, छुक-छुक चलती रेल
पढ़ना लिखना बन गया खेल
चन्दा मामा दूर से
करते हैं बातें प्यारी प्यारी
टिम-टिमाते तारों से
दुनिया लगती प्यारी प्यारी
छुक-छुक, छुक-छुक चलती रेल
पढ़ना लिखना बन गया खेल।

मुकेश, कक्षा : 4

### पंखा

ऊपर पंखा जब चलता है
नीचे बेबी तब सोता है
जब सोते-सोते भूख लगी
उठ के खा ली, मूंगफली
पर मूंगफली में दाना नहीं
क्या तुम हमारे नाना नहीं?

मधुबाला, कक्षा : 4

### प्यारी सी बिल्ली

मेरे पापा गये जब दिल्ली
लेके आये प्यारी सी बिल्ली
सबको प्यारी लगती है वो बिल्ली
लेकिन बारिश में हो गयी गीली
ठंड लगी तो लगी कांपने
लगी छींकने और हांफने
मैं उसे बोली तू कुछ तो सीख
बिना रूमाल के कभी न छींक।

बीना, कक्षा : 3

### मेला

हम मेले में जायेंगे
चाट पकौड़ी खायेंगे
मित्रों के संग घूमेंगे
नाचेंगे और गायेंगे
गुब्बारे, खिलौने लेकर
शाम को घर को आयेंगे।

कमलेन्दु, कक्षा : 5

### छुप छुप कर

ओ प्यारी सी बिल्ली रानी
छुप-छुप के क्यूं आती हो
हमें पता है घर का सारा
दूध तुम ही पी जाती हो
चूहों को तुम नहीं पकड़ती
उनके संग बतियाती हो
हमें भी लड़ना नहीं चाहिये
शायद यही सिखाती हो।

सुमन, कक्षा : 4

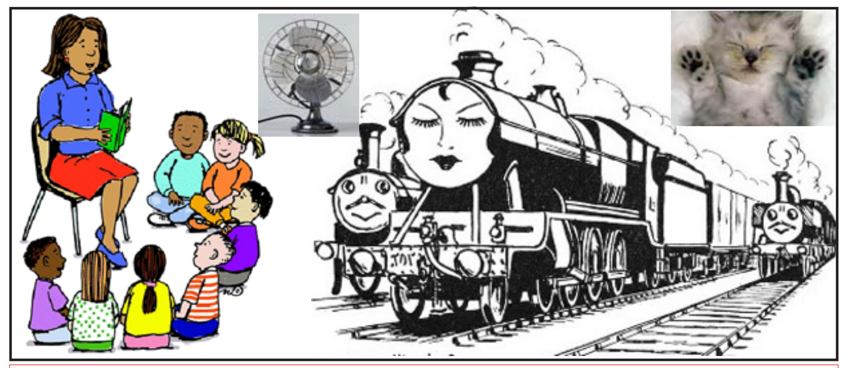

### पाठकों से...

पाठकगण अपने जिला, खण्ड, संकुल या स्कूल में चल रही विभिन्न गतिविधियों के बारे में हमें सूचित करें। सर्व शिक्षा अभियान संबंधी यह पृष्ठ हर माह के अंतिम बुधवार को प्रकाशित किया जाता है। पाठकगण सर्व शिक्षा अभियान संबंधी किसी भी सुझाव व जानकारी के लिए निम्न पते पर सम्पर्क कर सकते हैं :–

**राजेश शर्मा**
**राज्य परियोजना निदेशक,**
**राज्य परियोजना कार्यालय ( सर्व शिक्षा अभियान ),**
**डी.पी.ई.पी.भवन, लाल पानी, शिमला–171001**

प्रस्तुति : ज्योति रावत

### दादी मां

दादी मां, मेरी दादी मां
सबकी प्यारी दादी मां
अच्छी बातें हमें सिखाती
जब रोते तब हमें हंसाती
सबके साथ रहें प्यार से
हमें बस यही सिखाती
इसलिये तो दादी मां तुम
सबके ही मन को हो भाती।

प्रीति, कक्षा : 3

### टीचर

मेरे टीचर सबसे अच्छे
बड़ों में बड़े और
बच्चों के संग बच्चे
खेल खेल में हमें सिखाते
गुस्सा वह न कभी दिखाते
हमें हमेशा हैं बतलाते
अच्छी-अच्छी बातें।

अशोक, कक्षा : 3

### रमन

रमन जब बाग में आया
वहां उसने पवन को पाया
पीले पीले आम देखकर
दोनों का तब मन ललचाया
आम लगे थे ऊंची डाल पे
इसलिए कोई तोड़ न पाया
लालच बुरी बला है भाई
तब अपने दिल को समझाया।

रेखा, कक्षा : 5

### छुपन छुपाई

छुपन छुपाई दो भाई
तू है मेरा भाई छोटा
जा लाओ पानी का लोटा
लोटे में थोड़ा पानी
मम्मी मेरी लगती रानी
पापा मेरे फल लाते हैं
घर के राजा कहलाते हैं।

आंचल, कक्षा : 3

### मैं गांधी बन जाऊं

मां खादी की चादर दे दे,
मैं गांधी बन जाऊं
सब मित्रों के बीच बैठकर
रघुपति राघव गाऊं
छोटी सी धोती पहनूंगा
खादी की चादर ओढूंगा
घड़ी कमर में लटकाऊंगा
सैर सवेरे कर आऊंगा
तकली खूब चलाऊं
मां खादी की चादर दे दो,
मैं गांधी बन जाऊं।

उज्ज्वल, कक्षा : 2

### आम

रंग-बिरंगा, पीला आम
मीठा और रसीला आम
मुंह में पानी भर आता है
जब कहीं दिख जाता है
सब के मन को भाता है आम
दशहरी, कलमी, लंगड़ा आम।

दिव्या, कक्षा : 3